

प्रजापति का यज्ञ

मुंबई २/३/७६

इस संसार में जो सबसे बढ़कर के माया है वो है पढ़त मूर्खों की। पढ़त मूर्ख उन्हें कहते हैं जिनके लिए कबीरदास जी ने कहा है, 'पढ़ी पढ़ी पंडीत मूर्ख भय' और इसलिए मैं किताब लिखने में भी बहोत डरती थी। और जब किताब लिखने का सोचा भी है, तो भी ऐसे महामूर्खों के हाथ में वो नहीं पड़नी चाहिए। वे लोग उसी प्रकार हैं जिस प्रकार कोई इन्सान किसी भी देश में नहीं जाता है और झूठी बातें सारी दुनियाँ में बताता है कि मैं वहाँ गया था फिर वहाँ पे ये देखा, फिर वहाँ ये था, फिर वहाँ वो था फिर ऐसा हुआ और फिर किसीने ये कहा था, उसने वो कहा था अपनी कोई उनके पास प्रचिती नहीं होती। लेकिन आप जो सहजयोगी हैं आपको इसकी प्रचिती आयी है। आपके अन्दर से व्हायब्रेशन फूटे हैं माने ये चैतन्य बह रहा है। आपको इसका अनुभव आया है कि चैतन्य क्या चीज़ है। आप एक बड़े भारी स्थान पे बैठे हुए हो। वो लोग बड़े बड़े भाषण दे सकते हैं इसी चैतन्य के बारे में बता सकते हैं। बहोत बड़े श्लोक पढ़ सकते हैं। लेकिन उनको अनुभूति इतनी भी नहीं हुई और वो परमात्मा के राज्य से अभी बहोत दूर है। आपकी entry हो चुकी है।

उसका एक विशेष कारण है आपने पढ़ा होगा की गणेश जी का जन्म सिर्फ उसकी माँ ने ही किया था। अपनी सृष्टि रचना से पहले ही उसने अपने बेटे को जन्म दिया था। खुद माँ ने ही ये सब किया था। इसलिए की बाद में वो पिता को जान सकें और उसको एक विशेष शक्तिशाली बनाया कि उसकी ओर ब्रह्मा, विष्णू, महेश कोई भी नजर उठाकर के भी देख न सके, इतना शक्तिशाली। एक विशेष रूप का वो बालक था। और उसी की पुनरावृत्ति आज इस कलयूग में हुई है।

आपको भी मैंने सहस्रार से जन्म दिया है एक विशेष रूप से इसलिए आपके अन्दर व्हायब्रेशन छूठ रहे हैं। लेकिन आप में से कितने लोग हैं जो अपनी इज्जत करते हैं? अपने को समझते हैं की कोई विशेष चीज़ हमने पायी है और उसी विशेष तरह से हमें रहना चाहिए। अपने जीवन को उसी तरह से बनाना चाहिए। आपका स्थान देव लोक से भी ऊँचा बना है। आपका वो स्थान है की आपसे तो देवलोक भी ईर्षा करें। किसी देवों ने इस तरह उँगलियों के इशारे पर जागृति नहीं की गणेश छोड़कर। किसी भी साधु संतों से ये कार्य नहीं हुआ था जिन्होंने हजारों साल की तपस्या की हुई है। इतना ही नहीं की तुम लोग पार हो गए हो तो इशारे पर कुण्डलिनी उठाते हो। और हर एक कुण्डलिनी को जाँचते हो की ये कहाँ है और कैसे है। लेकिन इतनी बड़ी चीज़ पाकर के भी आप लोगों ने अपनी इज्जत नहीं की। या तो हमारा नसीब खोटा है की हमें खोटे ही सिक्के मिलें वो चल ही नहीं सकते। आधा अधुरापन इतना अधिक है, इतना अधिक है की कभी कभी मेरा मन ये चाहता है कि अब बंद कर दें इस सहजयोग को, अब खत्म करें। डाँटते भी हैं, कहते भी हैं, प्यार भी करते हैं, दूलार भी करते हैं के सिर्फ जरा स्टेडी हो जाओ, स्टेडी हो जाओ, चित्त तुम्हारा कहाँ बहक रहा है। आप जानते हैं की आपके हाथ से हजारो लोग ठीक हो रहे हैं। और हो सकते हैं आपकी बीमारियाँ भाग गईं। परमात्मा की जो सर्वव्यापी ऑल परवेदिंग जो प्रेम शक्ति है वो आपके साथ साथ हर समय घूम रही है, आपको सहारा दे रही है। आप गलतियाँ भी कर रहे हैं वो देख रही है, आप झूठ बोलते हैं वो भी देख रही है। और आप माँ की निंदा करते हैं वो भी वो जान रही है। और आप बहोत छिछोरेपन से रह रहे हो,

बहोत ही सुपरफिशली आप रह रहे हो ये भी वो जानती है।

सहजयोग के प्रति आपका commitment बड़ा ही खराब है, ये भी ये शक्ति जानती है तो भी आपको वो सहारा दे रही है। हर जगह, हर घड़ी, हर प्रति आपको गाईड कर रही है। तो भी आप मिस गाईडेड है। आप रूपया, पैसा और दुनिया भर की सत्ता उसके लिए इस तरह से इतने छोटे होते जा रहे हैं। छी! छी! छी! बार बार मैं आपसे कहती हूँ कि आपका स्थान पूजनीय है। आप में से एक एक की पूजा करनी चाहिए ऐसा आपका स्थान है। और न भूतो न भविष्यती इस तरह से ऊँचे पद पर बिठाये गये लोग इस तरह का काम करने लग जाए तो दुनिया क्या कहेगी? आपका इतिहास में क्या नाम जाएगा? आप तो जानते ही हैं की आपमें से बहोत लोगों ने पार तक किया हुआ है। और फिर गिर गये। जिस पद पे इतने उँचे आप हैं उससे गिरना बहोत आसान है। सांसारिक चीजों में सहजयोग को नहीं देखना है। परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिए आप यहाँ आये हैं। हमें कितना रूपया मिला इसके बारे में या हमारा क्या लाभ हुआ इसके बारे में ये सांसारिक तुच्छ चीजों का महत्व करना सहजयोगियों के लिए शोभनीय नहीं है। आप हमारे पास परमात्मा को माँगने को आए हैं, सांसारिक चीजें माँगने के लिए नहीं आये हैं। ना ही कुछ मेरे भाषण सुन कर के झूठा ज्ञान इकट्ठा करने के लिए आये हैं आप? नहीं। जो साक्षात ज्ञान अन्दर ही देखिए जब भी आप ज्ञान माँगेंगे अन्दर से ज्ञान बहेगा। हर एक चीज स्पष्ट दिखायी पड़ेगी। यही ज्ञान है। बहोत हो गया अपने बालबच्चों के लिए और अपने घरद्वार की चिंताएँ। आप विशेष स्थान पर बिठाये गये हैं। जो लोग विशेष होंगे उन्हीं से विशेष कार्य घटित होगा।

मानव से अति मानव हो गये हैं। आपके लिए यज्ञ भी दो किये थे। पहले भी आप जानते हैं कि पूरा प्रयत्न हम कर रहे हैं। आपके सब अंग कम से कम परमेश्वर को समर्पित हो जाए। उसी को समर्पित करना है अपने को। उसके लिए जो भी स्वच्छता होती है, जैसे की माँ जब बाप घर आने वाला होता है तो कैसे बच्चे को धो-पोछ कर के सामने प्रेजेंटेशन देती है। वही करने के लिए बड़े प्यार से हम लोग ये यज्ञ कर रहे हैं। अपने सारे चक्रों में से बहनेवाली शक्तियाँ हैं उसे सब मैं आपको प्लावित कर सकती हूँ। लेकिन आप कभी कभी ऐसे जान पड़ते हैं की किसी दिवार से बात कर रहे हैं। किसी पत्थरों से सिर टकरा रही हूँ। ये दुष्ट, महादुष्ट मेरी बात सुनने नहीं वाले। ऐसा नहीं होना चाहिए। सहजयोग में गहरा उतरिए। सारे संसार का सुख एक तरफ है और परमात्मा के चरणार्णबिंद का स्वरूप एक तरफ है। उस परम सुख को पाने के बाद मनुष्य संसार के किसी भी सुख की ओर देखता नहीं। इस तरह मनुष्य अमृत को पा लेता है उसके बाद वो क्या मृत चीज पीनेवाला है? उसकी शक्तियाँ अनेक हैं। आपके लिए सज्ज है, आपके हाथ से बह रही है। आपको समझ में नहीं आता कि किस तरह से वे कहाँ पर काम कर रही हैं। मैंने बार बार आपसे कहा है की आप लोग सिख गये।

आज प्रजापति का, ब्रह्मदेव का यज्ञ किया गया है। आप जानते हैं कि मनुष्य पाँच शश्रशाशपीं से बना हुआ है। और ये जो पाँच तत्त्व हैं उन तत्त्व का पूजन करने का ही मतलब ब्रह्मा का पूजन करना है क्योंकि ये उनके आयुध हैं। और ये भी प्रजापति को भी माँ ने ही दिये हुये हैं। माँ के देखने से ही प्रकाश हुआ था इसलिए तेज का जो सन्मात्रा है या जो element है वो तैय्यार हुआ था। या essence of element कहिए। माँ ने जब खुशबू ली उसी सुगन्ध से ही पृथ्वी बनी। इसी तरह से पृथ्वी तत्त्व आया। माँ के बोलने से ही sound का तत्त्व तैय्यार हुआ है, जिसे नाद कहिए। इस प्रकार तन मात्रायें जो हैं वो तैय्यार हुईं। और तन मात्राओं से शश्रशाशपीं तैय्यार हुए हैं। ये सब प्रजापति का कार्य, ब्रह्म देव का कार्य है। और ब्रह्मदेव इसलिए पूजे नहीं जाते हैं, उनको पूजा नहीं जाता उसका कारण ये है की

संसार का सब कार्य कर रहे हैं। आपका जो शरीर है, आपको जो element का काम है वो कर रहे हैं। उसके लिए उनको पूजने की जरूरत नहीं है। वो अपने जगह बैठे काम कर रहे हैं।

आप को सिर्फ दो ही चीजों को पूजना चाहिए। एक तो शिव को जिससे की आपका existent बना रहे, आपका अस्तित्व बना रहें, आपके प्राण बने रहे और दूसरा आपको विष्णू को जो कि आपको evolution देता है, जिससे आपकी उत्क्रांति होती है। लेकिन यज्ञ प्रजापति का करना जरूरी है कि आपके अन्दर के जो पंचभूत हैं, आपके अन्दर के जो तत्त्व हैं इन पंचमहाभूतों के जो तत्त्व हैं इन्हें तन मात्रायें कहते हैं वो जागृत हो कर के आपको भी उसका यश प्रदान कर सके।

पहले यज्ञ सिर्फ प्रजापति का ही होता था। और बाद में विष्णूजी का भी शुरू हुआ। शिवजी का भी यज्ञ होना चाहिए ऐसा लोग सोचते हैं लेकिन उनका यज्ञ नहीं होता है। उनका रुद्र होता है। उसके भी कारण हैं। शास्त्र में जो कुछ विधि लिखी है उसके बहोत गहरे कारण हैं। इसलिए जो भी लिखा हुआ है उसको अगर आप फॉलो करते हैं तो कोई उसमें blindness नहीं है, अंधता नहीं है। जब की आपके पास व्हायब्रेशन है। आप स्वयं व्हायब्रेशन से जाँच पड़ताल कर सकते हैं की जो ये विचार हैं या जो कुछ किताब में लिखा है, ये ठीक हैं या नहीं। बहुत से जगह कुछ कुछ बीच में घुसेड़ दिया है हर एक पुस्तक में ये किया है। उसको भी आप देख सकते हैं अपने व्हायब्रेशन्स से ऐसे कौन जान सकता है। कौन आदमी पार है? कौन नहीं है? कौन realised है? कौन नहीं है? कौन सेव realised है? कौन ordinaly realised है? कौन जीवन मुक्त है? सब कुछ आप व्हायब्रेशन्स से जान सकते हैं। आप हर एक चीज व्हायब्रेशन्स में जान सकते हैं। जो अचेतन में है, जो unconscious में है। जो मनुष्य ने कभी नहीं जानी। उनकी एक एक बारीक बारीक चीज समझ सकते हैं। व्हायब्रेशन्स की भी एक एक ढंग होता है, एक एक तरिका होता है, एक एक उसकी लय होती है अलग अलग। लेकिन अभी तो बेसिस ही नहीं बन रहा आप लोगों का। तो मैं कैसे आगे की बात सिखाऊँ? अभी तो पहले ही क्लास में बैठे हैं उसी में एक दूसरे को नोंच रहे हैं। एक दूसरे को घसीट रहे हैं। एक दूसरे से झगड़ा कर रहे हैं बुद्ध जैसे। अपना बेसिक पहले ठीक कर लो फिर इस व्हायब्रेशन और एक एक चीज के परमीटेशन कॉम्बिनेशन से आप हर एक चीज समझ सकते हैं जो आप जानना चाहें। इतना ही नहीं आप स्वयं भी उठते जा रहे हैं। जैसे जैसे मनुष्य उठता जा रहा है वैसे वैसे वो जादा जानते जाता है। आप जानते हैं की जब आप नीचे खड़े थे तो आपको इतना नहीं दिखाई दे रहा था। इससे और आप उपर जाएंगे तो और आपको दिखाई देगा और अगर बहुत ऊपर चले गये तो और कुछ दिखाई देगा। जब आप चन्द्रमा पर चले जाएंगे तो पृथ्वी और तरह से दिखायी देगी वो पूरी की पूरी घुमती दिखायी देगी। उसका पूरा भ्रमण आपको दिखाई देगा। नहीं तो यहाँ बैठे बैठे तो पृथ्वी लग रही है जैसे की चौकोर हो।

इसलिए जैसे जैसे आदमी उठते जाता है। उठने का तरिका एक ही है अपने बोझ उतारते जाईए। सब बोझों को उतार दीजिए। जैसे जैसे बोझ उतारते जाएंगे आप अपने आप उपर उठते जाएंगे। फालतू के बोझ मेरा बाप ऐसा, मेरी माँ ऐसी, मेरा भाई वैसा, इसको चाहिए, उसको चाहिए, मेरी सत्ता है, मेरा पैसा है सब मूर्खता, miss identification। आपको अगर पाना है तो पाईये, अगर नहीं पाना है तो माफ कीजिए। दोनो चीज नहीं चल सकती। यहाँ आप परम तत्त्व को पाने के लिए, उसमें भूलने के लिए आये हैं। यहाँ पैसा कमाने के लिए आप नहीं आये हैं। यहाँ किसी तरह का भी व्यवसाय करने के लिए आप नहीं आये हैं। मुझसे कोई बागेंनिंग नहीं सिवाय एक चीज की आपको मैं परम तत्त्व से परिचित कराऊँ। फिर मुझे उसके लिए आपको डाँटना पड़ेगा। नाराज होना पड़ेगा। कभी

सिखाना पड़ेगा और कभी प्यार करना पड़ेगा। अगर आप इस चीज़ के लिए उत्सुक हैं और यही चीज़ माँगने आप मेरे पास आये हैं तो ठीक है। नहीं तो मुझे क्या? मैं तो अवलिया हूँ। मैं वैसे ही अपनी किताब बन्द कर दूँ। तुम अपने गरज से आये हों। मेरी गरज से नहीं आएं। मेरी भी गरज है क्योंकि माँ को बच्चों की गरज होती ही है। लेकिन ये माँ बड़ी अजीब है। निर्मम भी है, बड़ी निर्मम है। एकदम.... कर सबको बन्द भी कर सकती है। और उतनी ही मोहमयी और प्रेम करनेवाली।

आज के यज्ञ में पूर्ण चित्त से, पूरे अपने को समर्पित कर के करिए और ये वाला यज्ञ विशेष रूप से पंचतत्त्वों का होने के कारण आप लोगों की समझ में जादा आएगा। ये जड़ तत्त्वों पे है। लेकिन जड़ तत्त्व भी जरूरी होता है। अगर जड़ तत्त्व स्वच्छ ना हो तो बाकी कुछ भी नहीं बनता। और आपके जड़ तत्त्व ही गड़बड़ है। जब आपके जड़ तत्त्व स्वच्छ हो जाएंगे तो हमारा कार्य बहुत सुचारू रूप से होगा।

आज के यज्ञ में आपके पाँच यन्त्र खोलने वाली हूँ। प्रयत्न करूँगी। आप भी अपने को समर्पित करें। और कहें की हे प्रभू हमारे खोलो। प्रजापति से यही कहना की हमारे ये यन्त्र खोलो। और हमें कुछ नहीं चाहिए। इस वख्त सब फालतू की चीज़ें अपने जूतों के साथ बाहर रख दें। सब चीज़ें बाहर रखकर और अनन्त का जो प्रेम है उसको पाओ।